स्वतंत्र भारत में पराधीन हिन्दी

डॉ.पुष्पा गायकवाड
वै.धुंडा महाराज देगलूरकर महाविद्यालय,
देगलूर ता.देगलूर जि.नांदेड

प्रस्तावना :-

भारत स्वतंत्र होने पर भारतीय संविधान में 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया गया| तब से लेकर आजतक विद्यालय, महाविद्यालय, बैंक, एल.आय.सी., डाकखाने, आदि जगह पर हिन्दी दिवस मनाते है | कई हिन्दी के तारीफों के फूल बांधे जाते है तो कुछ भाषण बाजी से सभी का मन जीत लेते है | किसी ने हिन्दी को एक दिन पलकों पर बिठाया उसका सम्मान किया | हिन्दी हमारे देश का स्वाभिमान है | तो किसी ने हिन्दी सप्ताह मनाकर हिन्दी की वकालत की | कई जगह पर हिन्दी पखवाडा चलाया हिन्दी हमारे देश का गौरव है | हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है | किसी एक ने कहा हिन्दी सिर्फ राजभाषा है अहिन्दी लोगों पर ना थोपी जाय |

14 सितम्बर में हिन्दी का सम्मान बढाया हर कोई अपने तरीके से हिन्दी की बडे-जोरों से वकालत की | जजसाहब ने कहा गवाह पेश किया जाय | हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाना है तो उसका पक्ष लेकर अदालत में बोलनेवाला कोई तो गवाह चाहिए | सभी एक दूसरे को देखने लगे | नेता भागने लगे | संस्थाचालक बिखर गये | मंत्री महोदय ने मुंह फेर लिया | कोई भी उसका पक्ष लेनेवाला नहीं मिला सभी खामोश थे | हमारी हिन्दी अपने ही देश में राजनीति का शिकार बन गई | अपने ही घर में उसे आजतक संघर्ष करना पड़ रहा है | विदेशी भाषा देश की रानी बन गई और हिन्दी हमारी बाहर वाली हो गई | स्वतंत्र भारत में पराधीन हिन्दी हो गई क्या कमी है हिन्दी में हिन्दी तो पूरे विश्व में छा गई है |

भारत की जनसंख्या आज 145 करोड है जिसमें 70 करोड लोग हिन्दी में बोलते, समझते, लिखते है | चीन, जापान, कोरिया, जर्मनी, वियतनाम, फ्रेंच आदि देशो में लोग हर कार्य अपनी स्वभाषा में करते है | और हम अपनी भाषा को छोड़कर विदेशी भाषा में कार्य करते है |

हिन्दी जिसे विश्व की 70 करोड़ जनता बोलती और समझती है | जिस भाषा को विश्व की तीसरी भाषाओं में गीना जाता है | वह भाषा अपने ही देश में हार गई यह चिंता का विषय है जिस पर विचार विमर्श होना आवश्यक है |

हिन्दी भारतीयों की पहचान है वह सब की शान है | विश्व्पटल पर वह महान है पर भारत में बेगानी बनी है |

हिन्दी भारत की आत्मा की वाणी है इसका उन्यन लोकाश्रय में हुआ है | वह जनता के ह्रदय और मन की भाषा के रुप में युगों से राष्ट्र के भावों की अभिव्यक्ति करती चली आ रही है, तुलसी, सूर, मीरा और कबीर जैसे संतो ने इसे जहाँ संवारा था | वही दूसरी और भारतेन्दु, दयानंद सरस्वती ईश्व्रचंद विद्यासागर जैसे लोगों ने इसकी शक्ति का बोध राष्ट्र को कराया था |

"हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसने अनेक सम्राटों, नवाबों, अंग्रेजी पदाधिकारियों को उदित एवं अस्त होते देखा है | जिसने गुरुनानक, संत तुकाराम, कबीर, सूर, तूलसी जैसे महात्माओं की वाणी का रसास्वादन किया है | भारतेंन्दू हजारी प्रसाद, द्विवेदी, पंत, निराला, प्रसाद, प्रेमचंद्र जैसे विद्वान दिये है | जो महान राष्ट्र भक्तों, समाजसुधारकों, नेताओं की कंठ हार रही है | जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में पग से पग मिलाकर साया की तरह साथ दिया हो वह एकमात्र भाषा है हिन्दी |"।

विश्व पटल पर हिन्दी का महत्व् :-

क्या कमी है हमारे हिन्दी में जो स्वतंत्र भारत में पराधीन हिन्दी है | पूरे विश्व ने हिन्दी के महत्व को समझा है | इसलिए तो हिन्दी विश्व में गूँज रही है विश्व पटल पर धूम मचा रही है |

"अमेरिका की मशहूर युनिवर्सिटी पेनसिल्वेनिया ने एम.बी.ए.के छात्रों को हिन्दी का दो वर्षीय कोर्स अनिवार्य कर दिया है ताकि अमेरिका को हिन्दूस्तान में बिजनेस बढाने में भाषा संबंधी दिक्कतें न आएँ |"2

भारत का पडोसी चीन धीरे-धीरे हिन्दी प्रेम के रंग में रंगना शुरु हो गया है | "चीन के नौ विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढाई जा रही है | मारिशस की धरती पर द्वितीय हिन्दी सम्मेलन हुआ |"3

"रंगून विश्विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की उत्तम व्यवस्था है |"4

"पाकिस्तान के तीन विश्विद्यालयों में हिन्दी पढाई जाती है |"5

"पश्चिम जर्मनी के स्टुटगार्ट के भारत भवन में हिन्दी की कक्षाएँ चलाई जाती है|"6

हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा है फिजी, मोरिशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात की जनता भी हिन्दी को अपने देश में अपनाते है | फरवरी 2019 में अबुधाबी में हिन्दी को न्यायालय की तीसरी भाषा के रुप में मान्यता मिली है |

वाणिज्यिक हिन्दी ने तो पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है | व्यावसायिक हिन्दी का प्रयोग सभी प्रकार के व्यापार, कारोबारों से जोडा जाता है | जिसमें व्यापार, वाणिज्य्, परिवहन, शेयर बाजार, बीमाक्षेत्र, बैकिंग, आयात-निर्यात आदि में उसके महत्व को समझा जा रहा है |

जनसंचार माध्यम के अंतर्गत हिन्दी के बढते कदम कम महत्वपूर्ण नहीं है | समाचार पत्र, रेडिओ, दूरदर्शन, फिल्म्, कम्प्युटर, इन्टरनेट, विज्ञापन आदि क्षेत्रों में उसका महत्व बढ रहा है |

हिन्दी विदेशी वसुधा पर पठन, पाठन तकही सीमित नहीं बल्कि समय – समय पर विश्वस्तरीय संम्मेलन भी हुआ | विश्व के अनेक देशो में आयोजित 8 विश्व हिन्दी संम्मेलनों में हिन्दी भाषा के महत्व और संयुक्त राष्ट्रसंघ में इसे अधिकारिक भाषा के रुप में स्थान दिलवाने का महत्व्पूर्ण प्रयास हुआ है |

वतन में हिन्दी :-

हिन्दी फिल्मी सितारे हिन्दी की मुस्कान में करोडों रुपये कमा रहे है | हर कोई अपनी रोटी सेंकने में लगा है पर इस देश की हिन्दी पर किसी का ध्यान नहीं है भाई| क्यों भाई तुम्हें हिन्दी राज नहीं आई |

इस देश के वकील, जज, अदालत, इंजिनिअर, डॉक्ट्र, मंत्री, नेता, संस्थाचालक क्यों खामोश रहते | विदेशियों को हिन्दी का महत्व समझ में आया | क्या कमी है भारत की वाणी में | यह तो देश की अभिव्यक्ति का अमोघ शस्त्र है |

महात्मा गांधी ने बहूत प्रारंभ में ही क्या अंग्रेजी राष्ट्रभाषा हो सकती है इस लेख में हिन्दी की हिमाकत करते हूये लिखा था "मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियां क्यों न हो मैं उससे उसी तरह चिपटा रहूँगा जैसे बच्चा अपनी माँ की छाती से" |6

15 अगस्त 1949 को भारत के आजादी के दिन भी

बी.बी.सी. को केवल एक पंक्ति का संदेश देते हुये उन्होंने कहा था – "दुनिया से कह दो गांधी अंग्रेजी नहीं जानता"|7

आर्य समाज ने स्वभाषा स्वधर्म, स्वराज्य्, का पहला आंदोलन हिन्दी भाषा में किया है | स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा है, "मेरी आँखे उस दिन को देखने के लिए तरस रही है, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारती एक भाषा हिन्दी को समझने और बोलने लग जायेंगे |"

डॉ.राजेंद्र अवस्थीने हिन्दी का महत्व इस तरह बताया है उन्हीं के शब्दों में – "हिन्दी ऐसे देश की प्रमूख भाषा है जो विश्वशांती और विश्वबंधुत्व के प्रति अगाध प्रेम रखती है | यह भाषा प्राचीन कालसे देश की विभिन्न संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करती है यहाँ के मेहनत कश लोगों ने इसे विश्व के अन्य देशों में पहुँचाया है और इसे आंतरराष्ट्रीय ख्याति प्रदान की है |"8

हिन्दी विदेशों में आंतरराष्ट्रीय और विश्व भाषा बन गई यह गौरव की बात है पर भारत में वह राजसिंहासन पर आजतक विराजित नहीं है | यह बडे ही दू:ख की बात है | देश को आजाद करने के लिए सभी भारतीय, जाति, पंथ, धर्म, भाषा को भूलाकर संघटित हूये थे | इस वतन को अंग्रेजों की बेडी से मुक्त करना उनका प्रथम लक्ष था | वो जीत भी गये | अब हम आपस में ही क्यों एक दूसरे की टांग खिंच रहे है | भाषा को लेकर हमारे देश में भाषावाद, जातिवाद, प्रांतवाद तो शुरु है कब तक आपस में लढते रहेंगे | हिन्दी तो अपने देश की भाषा है |

निष्कर्ष :-

"अंग्रेज तो चले गये पर अंग्रेजी छोड़ गये इसका नतीजा यह हुआ अंग्रेजी को 15 वर्ष की अवधी तक उसे हिन्दी राजभाषा के साथ रखा गया | अंग्रेजी की जड़ें स्वतंत्र भारत में मजबूत बन गयी | हम अंग्रेजी के रंग में इतने रंग गये हम अपनी संस्कृति को भूल रहे है | हिन्दी हमारी अपने ही देश में संघर्ष कर रही है | वे दिन दूर नहीं है संभल जाओ हम सब पहले एक है जाति, धर्म, पंथ, भाषा को भूलाकर राष्ट्रभाषा का सम्मान बढाये | हिन्दी को उसका अधिकार दिलाये –

जो भरा नहीं भावों से
बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं पत्थर है
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं.....

हिंन्दी ने कहा मेरी जनता गावों में बसती है, देश की भाषा हिन्दी अदालत में गुहार लगाई, जज साहब, मेरी दुनिया बडी है, मैं क्रांतिकारक के साथ लडी, समाजसुधारकों के साथ खडी, साहित्यकारों की कंठहार रही हिन्दी ने कटघरे में खडे होकर कहा, ये सभी तो मेरे अपने है, मेरा केस धारा 343 से शुरु है |

मैं अभिमान की भाषा हिन्दी
स्वाभिमान की भाषा हिन्दी
स्वतंत्र भारत की आशा हिन्दी
देश के सिंहासन पर कोई और क्यों ?
मैं अपने ही देश में पराई क्यों ?
आश्वासन झूटे
वादे टूटे
अपनों ने ही लूटा
मेरा पक्ष अधूरा छूटा
मैं आंस लगाये बैठी
मैं इस वतन की भाषा
मिट्टी की आशा
क्यों बन नहीं पाई राष्ट्रभाषा.....

संदर्भ ग्रंथ :-

१. हिन्दी भाषा विज्ञान – डॉ.टी.पी.देशपांडे
२. भाषाशास्त्र – डॉ.शोभा देशपांडे, पृ.सं.118, 120, 125.
३. विकिपिडिया
४. अक्षरा पत्रिका – डॉ.माया खत्री – 2009.